मेन्स मास्टर

पुराना और मजबूत

संदर्भ

सोवियत संघ का पतन, भारत और चीन का उदय, अमेरिका-चीन तनाव, अमेरिका-भारत संबंधों का गहरा होना और रूस के पश्चिम से नाता तोड़ने और यूक्रेन के खिलाफ युद्ध के कारण रूसी-चीनी साझेदारी में गहरा असर पड़ा है। रूसी-भारत संबंधों पर प्रभाव। मॉस्को-नई दिल्ली संबंधों के तीन स्तंभों में से केवल एक ही बचा है: हथियारों का व्यापार। रूस भारत के लिए हथियारों का एक प्रमुख आपूर्तिकर्ता बना हुआ है, और रूसी उपकरण अभी भी भारतीय सशस्त्र बलों की बल संरचना का एक बड़ा हिस्सा बनाते हैं; लेकिन रूस को भारतीय हथियार बाजार में प्रतिस्पर्धा का सामना करना पड़ रहा है। हथियारों की आपूर्ति में विविधता लाने और अपने स्वयं के रक्षा उद्योग को विकसित करने की भारत की इच्छा के परिणामस्वरूप हाल के वर्षों में भारत को रूसी हथियारों की आपूर्ति में गिरावट आई है। लेकिन युद्धकालीन प्रतिबंधों के कारण, रूस भारत के सबसे बड़े ईंधन आपूर्तिकर्ताओं में से एक के रूप में उभरा है, जिसने रक्षा से परे द्विपक्षीय संबंधों में विविधता ला दी है। हाल ही में भारत के विदेश मंत्री ने रूस की यात्रा की और द हिंदू के इस संपादकीय में यात्रा के परिणाम का विश्लेषण करने का प्रयास किया गया है।

जयशंकर की रूस यात्रा की मुख्य बातें:

- **वैश्विक अनिश्चितता के बीच अटूट प्रतिबद्धता:**
  - वैश्विक तनाव और भारत के नाजुक संतुलन कार्य के बावजूद, जयशंकर की यात्रा ने भारत और रूस के बीच अटूट प्रतिबद्धता की पुष्टि की।
  - दोनों देशों ने ठोस समझौतों और रणनीतिक संवादों के माध्यम से चुनौतियों का समाधान करने और संबंधों को मजबूत करने की इच्छा प्रदर्शित की।
- **कथित मतभेदों को दूर करना:**
  - इस यात्रा ने कलह या कमजोर संबंधों की किसी भी कहानी का प्रभावी ढंग से मुकाबला किया।
  - जयशंकर का पुतिन के साथ सीधा जुड़ाव, उनके प्रवास की अवधि और गर्मजोशी के आदान-प्रदान ने घनिष्ठ सहयोग बनाए रखने की पारस्परिक इच्छा का संकेत दिया।
- **प्रमुख क्षेत्रों में ठोस प्रगति:**
  - कुडनकुलम परमाणु ऊर्जा विस्तार, कनेक्टिविटी परियोजनाओं, व्यापार वार्ता और संयुक्त सैन्य उत्पादन पर समझौतों ने ठोस प्रगति प्रदर्शित की।
  - संयुक्त राष्ट्र, एससीओ और ब्रिक्स जैसे बहुपक्षीय प्लेटफार्मों पर निरंतर समन्वय ने साझा वैश्विक दृष्टिकोण पर प्रकाश डाला।
- **प्रतिबंधों के सामने लचीलापन:**
  - पश्चिमी प्रतिबंधों के बावजूद, रूसी हाइड्रोकार्बन आयात बढ़ाने के लिए भारत की अटूट प्रतिबद्धता ने उनकी साझेदारी की ताकत को रेखांकित किया।
- **विश्व राजनीति में "स्थिरता" की पुनः पुष्टि:**
  - जयशंकर द्वारा पिछले छह दशकों में भारत-रूस संबंधों को "विश्व राजनीति में एकमात्र स्थिरता" के रूप में घोषित करने से सहयोगियों और प्रतिद्वंद्वियों दोनों को एक शक्तिशाली संदेश गया।

आगे देख रहा:

- 2024 में वार्षिक नेतृत्व शिखर सम्मेलन की बहाली उच्च-स्तरीय जुड़ाव के लिए एक नई प्रतिबद्धता का संकेत देती है।
- जटिल भू-राजनीतिक परिदृश्य पर ध्यान केंद्रित करते हुए अब ध्यान रुपया-रूबल भुगतान तंत्र और एस-400 डिलीवरी जैसे लंबित मुद्दों को संबोधित करने पर केंद्रित हो गया है।

- **पुनर्संतुलनशील विश्व में स्थायी साझेदारी:**
  - भारत और रूस का रणनीतिक अभिसरण और साझा इतिहास उनकी साझेदारी के लिए मजबूत आधार बना हुआ है।
  - वैश्विक बदलावों का सामना करने और घनिष्ठ संबंध बनाए रखने की उनकी क्षमता पर रिश्ते के समर्थकों और विरोधियों दोनों द्वारा बारीकी से निगरानी की जाएगी।

संकट में हताशा: भारतीयों द्वारा विकसित दुनिया में प्रवास के प्रयासों पर

संदर्भ

लेख में हाल ही में भारतीय प्रवासियों के पलायन, संकट, असुरक्षा और सीमित घरेलू अवसरों को प्रेरक कारकों के रूप में दर्शाया गया है। यह तस्करों पर कार्रवाई, सार्वजनिक शिक्षा और वैश्विक सहयोग जैसे समाधान प्रस्तावित करता है।

फ्रांसीसी हवाई अड्डे पर भारतीय नागरिकों को हिरासत में लिए जाने की हालिया घटना और मेक्सिको के माध्यम से अमेरिका में प्रवेश करने के प्रयासों में तेज वृद्धि एक जटिल मुद्दे को उजागर करती है: कुछ लोगों को विदेश में खतरनाक और अनिश्चित अवसरों की तलाश करने के लिए प्रेरित करने वाली हताशा।

योगदान देने वाले कारक:

- **भारत में संकट:** धार्मिक उत्पीड़न और कृषि संकट का हवाला देने वाली रिपोर्टें संभावित प्रेरकों के रूप में असंतोष और कठिनाई का सुझाव देती हैं।
- **भेद्यता और गलत सूचना:** जागरूकता की कमी और तस्करों द्वारा संभावित शोषण व्यक्तियों को धोखे और खतरनाक यात्राओं के प्रति संवेदनशील बनाते हैं।
- **सीमित घरेलू अवसर:** विकसित दुनिया के भीतर प्रतिबंधित प्रवासन और घरेलू आर्थिक संघर्ष कुछ लोगों को अपरंपरागत रास्तों की ओर धकेल सकते हैं।

चुनौतियों का समाधान:

- **सरकारी हस्तक्षेप:** तस्करों पर कार्रवाई, फ्रांसीसी घटना की जांच, और कृषक समुदायों में संकट के मूल कारणों को संबोधित करना महत्वपूर्ण कदम हैं।
- **जागरूकता बढ़ाना:** सार्वजनिक शिक्षा अभियान व्यक्तियों को भ्रामक प्रथाओं को पहचानने और सूचित निर्णय लेने के लिए सशक्त बना सकते हैं।

• **अंतर्राष्ट्रीय सहयोग की तलाश:** गंतव्य देशों के साथ बातचीत और क्षेत्रीय सहयोग से सीमा सुरक्षा बढ़ सकती है और मानव तस्करी नेटवर्क का समाधान हो सकता है।

आगे बढ़ते हुए:

• प्रवासन की बहुआयामी प्रकृति को स्वीकार करना आवश्यक है। केवल सीमा नियंत्रण पर ध्यान केंद्रित करने से लोगों की पसंद को प्रभावित करने वाले सामाजिक और आर्थिक कारकों की अनदेखी हो जाती है।

• घरेलू अवसरों, विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में निवेश, व्यवहार्य विकल्प प्रदान कर सकता है और विदेशों में जोखिम भरे उद्यमों के आकर्षण को रोक सकता है।

• कमजोर आबादी को शोषण और गलत सूचना से बचाने के लिए कानून प्रवर्तन, सामाजिक सहायता कार्यक्रम और सामुदायिक आउटरीच को शामिल करते हुए एक व्यापक दृष्टिकोण की आवश्यकता है।

क्या दुनिया भर में दक्षिणपंथी लोकलुभावनवाद फिर से उभर रहा है?

संदर्भ

लेख दक्षिणपंथी लोकलुभावनवाद के वैश्विक पुनरुत्थान की जांच करता है, इसकी विशेषताओं, क्षेत्रीय विविधताओं और इसके उदय को बढ़ावा देने वाले कारकों को परिभाषित करता है। यह लोकतांत्रिक संस्थानों की चुनौतियों, सामान्य जातीय-राष्ट्रवादी रुझानों और शासन और लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं में बढ़ते अविश्वास के कारणों पर प्रकाश डालता है।

दुनिया भर में दक्षिणपंथी लोकलुभावनवाद का अवलोकन:

• **दक्षिणपंथी लोकलुभावनवाद की परिभाषा:** यह लोकतांत्रिक संस्थानों की वैधता को चुनौती देता है और कथित अभिजात वर्ग या गैर-प्रतिनिधि ताकतों के खिलाफ लोगों की सच्ची आवाज का प्रतिनिधित्व करने का दावा करता है, जो पहचान-आधारित शिकायतों के साथ आर्थिक अपीलों को जोड़ता है।

• **वामपंथी बनाम दक्षिणपंथी लोकलुभावनवाद:** वामपंथी लोकलुभावनवाद नीति पर हावी होने वाले अमीर अभिजात वर्ग पर केंद्रित है, जबकि दक्षिणपंथी लोकलुभावनवाद अल्पसंख्यकों को 'अन्य' के रूप में लक्षित करता है और उनकी वैधता पर सवाल उठाता है, दोनों ही अलोकतांत्रिक प्रवृत्ति साझा करते हैं।

सामान्य रुझान और क्षेत्रीय भिन्नताएँ:

• **सामान्य जातीय-राष्ट्रवादी रुझान:** सभी क्षेत्रों में प्रचलित बहुसंख्यक बनाम 'अन्य' पहचान और सामाजिक मुद्दों के लिए बाहरी लोगों और अल्पसंख्यकों को दोषी ठहराना।

• **क्षेत्रीय भेद:** अद्वितीय संदर्भों और लोकलुभावन उद्भव पर मजबूत बनाम कमजोर राजनीतिक दल प्रणालियों के प्रभाव पर आधारित विभिन्न मुद्दे और अपीलें।

दक्षिणपंथी लोकलुभावनवाद को बढ़ावा देने वाले कारक:

• **शिकायतें और प्रणालीगत पतन:** पारंपरिक पार्टी प्रणालियाँ ढह रही हैं, जिससे शासन का संकट पैदा हो गया है और लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं में विश्वास की कमी हो गई है।

• **राजकोषीय स्थान और शासन:** सीमित राजकोषीय संसाधनों के कारण अप्रभावी शासन होता है, जिसके परिणामस्वरूप सरकारें राजकोषीय सीमाओं के कारण पहचान-आधारित अपीलों का सहारा लेती हैं।

बढ़ते अविश्वास के मूल कारण:

• **वैचारिक बदलाव:** राजनीतिक परिणामों को आकार देने वाले शासन से अधिक विचारधारा पर जोर देना और सामाजिक और राजनीतिक क्षेत्रों को प्रभावित करने वाली जातीय-राष्ट्रवादी विचारधाराओं का उदय।

• **विविध दोषारोपण का खेल:** सामाजिक मुद्दों के लिए 'दूसरों' को दोषी ठहराने की आम प्रवृत्ति, विशिष्ट मुद्दों के कारण विभिन्न क्षेत्रों में असंतोष बढ़ रहा है।

प्रीलिम्स ब्लास्टर

क्या पेगासस स्पाइवेयर भारत में पत्रकारों को निशाना बना रहा है?

👮 एमनेस्टी इंटरनेशनल और द वाशिंगटन पोस्ट ने सिद्धार्थ वरदराजन और आनंद मंगनाले सहित भारत में पत्रकारों को निशाना बनाने के लिए पेगासस स्पाइवेयर के चल रहे उपयोग का आरोप लगाया।

📱 एमनेस्टी की सुरक्षा लैब को उनके उपकरणों पर पेगासस के निशान मिले, जो कथित तौर पर "शून्य-क्लिक शोषण" के माध्यम से स्थापित किए गए थे, जिसके लिए डिवाइस मालिक से कोई कार्रवाई की आवश्यकता नहीं थी।

🛡️ "BLASTPAST" नामक शोषण में Apple HomeKit के साथ लिंक करने का प्रयास करना और iMessage के माध्यम से दुर्भावनापूर्ण सामग्री भेजना शामिल है।

🚓 पेगासस के निर्माता एनएसओ ने पत्रकारों या गैर-आपराधिक व्यक्तियों को निशाना बनाने से इनकार करते हुए केवल अपराध से लड़ने वाली कानून प्रवर्तन एजेंसियों के लिए अपनी तकनीक का परीक्षण करने का दावा किया।

📰 2021 में, 'पेगासस प्रोजेक्ट' ने भारत में पत्रकारों और अधिकारियों की संभावित निगरानी पर प्रकाश डाला।

⚖️ सुप्रीम कोर्ट की एक समिति ने आरोपों की जांच की, सरकार कथित तौर पर सहयोग नहीं कर रही थी, और कार्यकर्ताओं ने बड़े पैमाने पर निगरानी का आरोप लगाते हुए अदालत में याचिका दायर की।

संबद्ध ऋण

- 🏦 आरबीआई की हालिया घोषणा में इसके विनियमन के तहत संस्थाओं के लिए 'कनेक्टेड लेंडिंग' (सीएल) से संबंधित एक एकीकृत नियामक ढांचा स्थापित करने की योजना की रूपरेखा दी गई है।
- 🌐 'कनेक्टेड लेंडिंग' स्वामित्व या नियंत्रण के माध्यम से जुड़े व्यक्तियों या फर्मों को ऋण के विस्तार को संदर्भित करता है, जिसमें प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष स्वामित्व, नियंत्रण का प्रयास, या पारिवारिक और समूह संबंध शामिल हैं।
- 📊 जुड़े हुए पक्षों के उदाहरणों में एक फर्म की मूल कंपनी, प्रमुख शेयरधारक, सहायक कंपनियां, संबद्ध संस्थाएं, निदेशक और कार्यकारी अधिकारी शामिल हैं।

मुदियेट्टु: पारंपरिक मंदिर अनुष्ठान थिएटर

देवी काली और दानव दारिका के बीच युद्ध की कहानी पर आधारित भद्रकाली पंथ की एक शाखा, मुदियेट्टु का पारंपरिक मंदिर अनुष्ठान थिएटर, गुरुवार को इरिंजलाकुडा में थिरुमारियूर कुंजन मारार स्मारक गुरुकुलम द्वारा प्रस्तुत किया गया।